वर्तमान चित्रण शैली में नवाचार

*डॉ. नीरू कल्ला

सभी शिक्षकों में नवाचार की संभावनाएं मौजूद होती हैं, लेकिन औसत शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम पाठ्यक्रम पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना है। बच्चे की उत्सुकता का विकास शिक्षक न अपनी जिम्मेदारी समझता है, न स्कूल में ऐसी परिस्थितियां हैं, जिनमें वह इस जिम्मेदारी को निभा सके।

कई बार ऐसा महसूस होती है। कि वर्तमान में शिक्षा का लक्ष्य केवल स्कूल में भर्ती होना, कार्यक्रमों में भाग लेना और प्रमाण पत्र प्राप्त करना हो गया है। लेकिन इन हालात के पीछे कुछ बुनियादी कारण हैं, जिसमें शिक्षण की दकियानूसी संस्कृति और परम्परागत पाठ्य पुस्तकें भी शामिल हैं। स्कूल केवल संस्थाओं के रूप में फैल रहे हैं और वहां भी जानकारी देने पर अनावश्यक ज़ोर है। शिक्षक बच्चों के प्रति सरस और प्रयोगशील नहीं है।

फिर भी कुछ शिक्षक ऐसे भी हैं, जिन्होंने प्रयोग, शोध और क्रियात्मक अनुसंधान पर आधारित नवाचारों से शैक्षिक स्तर को रूपांतरित ही नहीं किया बल्कि शैक्षिक चिंतन से कर्म का चरित्र बदलने की कोशिश की है। एक समय था, जब स्कूलों की मौत की घोषणा कर दी गई थी लेकिन फ्रोबेल की गीत-शैली, मांटेसरी की खेल-शैली और गिजु भाई की कहानी एवं क्रिया-शैली ने स्कूलों को पाठ्यक्रमों व पुस्तकों की जटिलता से मुक्त कर उसे बालकेन्द्रित रूप दिया। जॉन होल्ट ने अपनी पुस्तक 'हाऊ चिल्ड्रन फेल' में संस्थायी स्वरूप की समूची कल्पना को बाल सुलभ क्रियाओं के आनंद से बदलने की प्रक्रिया विकसित की।

उक्त बातों का आशय शिक्षा में नवाचार के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करना है। शिक्षा में नवाचार की अहम भूमिका है। नवाचार बच्चों के सहज विकास की प्रकिया के साथ ताल-मेल बिठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, एक उदाहरण से इस बात को समझने की कोशिश करते हैं।

कंचे ... अंक कार्ड और गणित

गांव में बच्चे कंचे खेलते ही हैं। और यदि शिक्षक वहां से निकले तो वे भाग खड़े होते हैं। मुझे देखकर भी कंचे खेलते बच्चे भाग जाते थे। स्कूल के मैदान में भी बच्चे कंचे खेलते थे। मैंने एक दिन कुछ बच्चों को कंचे खेलते हुए पकड़ लिया और उनसे कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ कंचे खेलूंगा।' पहले तो वे डर गए लेकिन जब मैं गणित के अंक कार्ड लेकर उनके साथ खेलने लगा तो वे खुश हुए। गोले में कंचों को ढेर रख दिया। एक

बच्चे को अंटे से मारने को कहा। उसने अंटा मारा, कंचे बिखर गए। मैंने कुछ बच्चों से बिखरे कंचे बुलवाए और कुछ से गोले क्या हम आमतौर पर बच्चों की स्वाभाविक क्रियाएं देखकर उन्हें समझने की कोशिश करते हैं? क्या यह देखने की कोशिश करते हैं कि बच्चे अपनी गतिविधियों से क्या सीख रहे हैं? यदि हम यह देख पाएं तो ढेरों नवाचार और शिक्षण विधियां अपने आप जन्म लेती हैं। में बचे शेष कंचे। मैंने कहा - जिनके हाथ में जितने कंचे हैं, वह उतने का ही अंक कार्ड ले आए। बच्चों को मज़ा आया।

जब बच्चे अंक कार्ड ले आए तो मैंने कहा लाइन से खड़े हो जाओ और अपने से पहले वाले लड़के से अंक पूछकर अपने अंक में जोड़ो और अगले बच्चे को बताओ। ऐसा सभी करेंगे। बच्चों को इस खेल में मज़ा आने लगा और मैं इसी बहाने अंक पहचानने एवं जोड़ने के अभ्यास कराने लगा। दो कंचों के बीच कदम से, बित्ते से और लकड़ी से नापने को उन्हें कहता तथा बड़े सहज ढंग से अमानक इकाइयों का ज्ञान उन्हें दे देता। बच्चे अब निडर होकर कंचे खेलते थे, और उनमें मेरे प्रयोग जुड़े रहते थे ।

नवाचार की असीम संभावनाएं

सभी शिक्षकों में नवाचार की संभावनाएं मौजूद होती हैं, लेकिन औसत शिक्षक यह मानकर चलता है। कि उसका काम पाठ्यक्रम पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना है। बच्चे की उत्सुकता का विकास शिक्षक ने अपनी जिम्मेदारी समझता है, न स्कूल में ऐसी परिस्थितियां हैं, जिनमें वह इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा सके।

क्या हम आमतौर पर बच्चों की स्वाभाविक क्रियाएं देखकर उन्हें समझने की कोशिश करते हैं? क्या यह देखने की कोशिश करते हैं कि बच्चे अपनी गतिविधियों से क्या सीख रहे हैं? यदि हम यह देख पाएं तो ढेरों नवाचार और शिक्षण विधियां अपने आप जन्म लेती हैं, जिनसे हम बच्चों को बोझिल, उबाऊ और अरुचिकर शिक्षण से हटाकर आनंददायी और रुचिकर शिक्षा दे सकते हैं।

नवाचार अपने काम के प्रति रचनात्मक, ज़िम्मेवार, ठोस व व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने का एक तरीका होता है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री जॉन होल्ट ने लिखा है कि उनके छात्रों ने 'भिन्न' के बारे में जो सवाल उठाया था, उसका सही उत्तर ढूंढ पाने में उन्हें तेरह वर्ष लग गए।

ऐसे सवाल, ऐसे शोध व खोज ही शिक्षक के रूप में काम करने का आनंद है। अधिकांश शिक्षकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण पद्धतियों में विद्यार्थियों के लिए कोई चुनौती नहीं होती। अधिकतम कक्षाओं में पठन - पाठन की प्रक्रिया की विशेषता है, जानकारी का हस्तांतरण - ने कि प्रयोग, अनुसंधान या अवलोकन। जबकि शिक्षकों के पास उनके जीवंत अनुभव होते हैं जिन्हें वे शैक्षिक चिंतन में उतारकर नवाचार के रूप में वास्तविक स्वरूप प्रदान करें तो बच्चे अपनी नीरसता और उदासी को भेदकर उल्हास और जिज्ञासा की धारा में बह सकते हैं।

दिशाओं का ज्ञान

मैंने एक बार महसूस किया कि मेरी शाला के अधिकांश विद्यार्थियों को दिशाओं का ज्ञान नहीं है। मैंने एक दिन सुबह की प्रार्थना के बाद सभी से पूछो, 'सूरज किस तरफ से निकलता है?" बच्चों ने हाथ से इशारा करके बताया। मैंने कहा, "सभी उस तरफ घूम जाओ।'' फिर मैंने कहा, "अपनी पीठ की तरफ घूम जाओ।'' फिर कहा, अपना बायां हाथ उठाओ।' कुछ ने बायां हाथ उठाया लेकिन कुछ ने दायां हाथ उठा दिया। मैंने उस दिन सिर्फ बायां और दायां का अभ्यास कराया। दूसरे दिन मैंने सूरज निकलने की तरफ, पीठ की तरफ, बाएं और दाएं हाथ की तरफ घूमने के अभ्यास कराए। तीसरे दिन मैंने बताया कि जहां से सूरज निकलता है उसे पूर्व दिशा, जहां डूबता है उसे पश्चिम दिशा कहते हैं। पूर्व की तरफ मुंह कर खड़े होने पर बायें हाथ की तरफ उत्तर दिशा और दाईं तरफ दक्षिण दिशा होती है। मैं दिशा का नाम लेता, बच्चे उस तरफ मुड़ते जाते। पंद्रह दिन तक दिशाओं का खेल चलता रहा, उससे जुड़े प्रश्न पूछे जाते रहे, मसलन किस दिशा में क्या है? वह चीज किस दिशा में है? इत्यादि। कक्षा तीन में दिशा पर एक गीत था। रोज प्रार्थना के बाद उसे बच्चों से दोहराना शुरू किया, एक महीने में सभी कक्षाओं के बच्चों को खेल-खेल में दिशाओं का ज्ञान पूरी तरह आ गया। मुझे लगा यह तो सामूहिक दक्षता है। मैंने फिर ऐसी यशपाल समिति की सिफारिश में बस्ते के बोझ को कम करने के लिए जो सुझाव दिए गए थे उसमें पाठ्यक्रम निर्माण में शिक्षकों को ज्यादा अवसर देने एवं शिक्षकों के नवाचारों को प्राथमिकता देने पर ज़ोर दिया गया था। कई सामूहिक दक्षताओं को खोजा और उन पर प्रयोग करना शुरू कर दिए।

उक्त उदाहरण बताने का उद्देश्य है कि नवाचारों के माध्यम से हम परम्परागत शैक्षिक जड़ता को तोड़ते हुए दक्षताओं को विकसित करने का प्रयास करें। इसके लिए आवश्यक होगा कि शिक्षक सृजनात्मक एवं अध्ययन - शील हों क्योंकि कुछ शिक्षक अनुभव से सीखते हैं, कुछ अध्ययन से, तो कुछ सृजन की साधना से।

भाषा और व्याकरण

ध्यान देने वाली बात यह है कि बच्चा भाषा ऐसे समय और संदर्भ में सीखता है, जहां उसका ध्यान भाषा पर केन्द्रित नहीं है। इसलिए यह जरूरी होता है कि कक्षा के अन्दर ही विभिन्न प्रकार के संदर्भ बनाए जाएं जिनके आधार पर बच्चे भाषा को विविध तरीकों से उपयोग करने का अभ्यास कर सकें।

व्याकरण एक कठिन विषय माना जाता है, और इस विषय से विद्यार्थियों को सहज ही कोई दिलचस्पी भी नहीं है। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, लिंग इत्यादि की परिभाषाएं रटी तो बड़ी जल्दी जा सकती हैं, लेकिन आसानी से समझ नहीं आती। मुझे गिजु भाई की पुस्तक 'दिवा-स्वप्न' का एक अंश याद आ रहा है, जिसमें शिक्षक व्याकरण को बड़े ही रोचक ढंग से पढ़ाता है। नवाचार की चर्चा में यह उपयुक्त उदाहरण है।

इस अंश में शिक्षक सबसे पहले तख्ते पर लिख देता है - "उठो, बैठो, दौड़ो, खेलो इत्यादि।'' फिर वो लड़कों से ये क्रियाएं करने को कहता है। लड़के बड़े आनंद से उन्हें करते हैं। फिर शिक्षक कुछ कार्डों में ये क्रियाएं

लिखकर उनमें बांट देता है; करने और समझने को कहता है। फिर छोटे छोटे प्रश्न पूछता है। मसलन जीवन कौन-सी क्रिया करता है?

संज्ञा पढ़ाने के लिए उसने लड़कों से कहा, "जिस चीज का कोई नाम हो तुम उसे ले आओ। जाकर पूछो तेरा क्या नाम है? अगर कोई नाम है, तो ले आओ।'' लड़के झट समझ गए। वे नाम वाली चीजें लाने लगे। शिक्षक ने एक पेटी में संज्ञा के कई कार्ड डाल दिए, लड़के उसमें से संज्ञा छांटने लगे। फिर उसने क्रिया पदों के कार्डों की पेटी और लाकर रख दी। दूसरा खेल बताया - क्रिया पद के योग्य संज्ञा ढूंढो और संज्ञा के योग्य क्रिया पद ढूंढो। उदाहरणार्थ 'घोड़ा' शब्द लेकर 'दौड़ता है'।

***सहायक आचार्य**
चित्रकला विभाग
एस.एस.जैन सुबोध बी.एड कॉलेज
जयपुर (राज.)